SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में बंजारा जनजाति द्वारा बनाए गए कौड़ी शिल्प के स्वरूप में परिवर्तन का अध्ययन

शिप्रा बेनर्जी, (पीएच. डी.), शोध निर्देशिका, गृह विज्ञान विभाग,
ऋचा ठाकुर, शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
शास. दु.ब. महिला महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

शिप्रा बेनर्जी, (पीएच. डी.), शोध निर्देशिका,
गृह विज्ञान विभाग,
ऋचा ठाकुर, शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
शास. दु.ब. महिला महाविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/12/2021
Revised on : -----
Accepted on : 22/12/2021
Plagiarism : 03% on 16/12/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 3%

Date: Thursday, December 16, 2021
Statistics: 44 words Plagiarized / 1343 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

NRrhlx<+ ds cLrj ftys esa catkjk tutkfr)kjk cuk, x, dkSM+h f'kYi ds Lo:i esa ifjorZu dk v/;;u MkW- f'kizk csuthZ] lgk;d izk/;kid] x`g foKku]'kkl- nq-c- efgyk egkfo|ky;] jk;iqj] NRrhlx<+] HkkjrA Jherh _pk Bkdqj ]'kks/k Nk=k ]x`g foKku]'kkl - nq-c- efgyk egkfo|ky;] jk;iqj]NRrhlx<+] HkkjrA

शोध सार

कौड़ी शिल्प छत्तीसगढ़ की एक पारंपरिक लोक कला है, बस्तर जिले के इरीकपाल, ग्राम तोकापाल में इस शिल्प का कार्य बंजारा जनजाति द्वारा किया जाता है। कौड़ी शिल्प प्राचीन काल से ही बस्तर में प्रचलित है, जिसे आज पुरे विश्व में पसंद किया जाता है। बैगा आदिवासी जब मेले में रंग–बिरंगे कपड़े पहनकर भगवान की आराधना करते है तो कपड़े में गुथी हुई सफेद कौड़ीयाँ सभी का ध्यान आकर्षित करती है।

इस प्रस्तुत शोध पत्र में बस्तर जिले के इरीकपाल (तोकापाल) क्षेत्र के बंजारा जनजातियों के द्वारा बनाए गए, कौड़ी शिल्प का अध्ययन व साथ ही कौड़ी शिल्प का अलंकरण भारतीय परिधान में इसका अध्ययन किया गया है। इसका उद्देश्य लुप्त होती हुई, कौड़ी शिल्प के प्रति लोगों को जागरूक करना व परिधानों में इसका उपयोग फैशन के अनुरूप कर लोगों के मध्य कौड़ी शिल्प की लोकप्रियता बढ़ाना है।

मुख्य शब्द

विलुप्त, कौड़ी शिल्प, बस्तर, बंजारा जनजाति, भनकी बाई.

परिचय

छत्तीसगढ़ अपने पारंपरिक कला और शिल्पों के लिए देश–विदेश में प्रसिद्ध है। विभिन्न आदिवासी जनजाति के शिल्पकार अलग–अलग शिल्प का कार्य करने में माहिर है। छत्तीसगढ़ के पारंपरिक कला को संजो के रखने का श्रेय इन आदिवासी जनजातियों को ही जाता है।

आसपास का परिवेश, लोगों का रहन–सहन व समय की मांग के अनुसार कलाओं और शिल्पों में परिवर्तन

लाया जाने लगा है, पर आज कौड़ी शिल्प अपने विलुप्तता की कगार पर पहुँच गया है, केवल इरीकपाल (जगदलपुर) बस्तर संभाग के कुछ घरों में लगभग 60 लोग ही इस कला को बनाने वाले शिल्पी शेष है। उस क्षेत्र में यह कला भगवान की आराधना से जुड़ी हुई है।

कौड़ी शिल्पः आज बस्तर की हस्तशिल्प देश–विदेश में प्रसिद्ध है। बस्तर कौड़ी शिल्प के अलावा अन्य शिल्पों के लिए भी प्रसिद्ध है। हस्तशिल्प के अंतर्गत आज कौड़ी शिल्प कला लगभग विलुप्त सी हो गई है।

चाहे बैगा जनजाति के कपड़े हो, गौड़ माड़िया, मुकूट हो या फिर चोली–घाघरा या छोटी टोकरी पर कौड़ी लगाकर उसे सजाने की एवं गुथने का हो, पर इस परम्परागत कला को अब कोई पुछने वाला भी नहीं है। परिधान में चोली–घाघरा, साड़ी आदि तथा टोकरी अथवा झोले में कौड़ियों को गूंथने की कला को कौड़ी शिल्प कहा जाता है।

इतिहासः विश्व के लगभग सभी घुमक्कड़ बंजारा समुदायों में कपड़ों पर अनेक प्रकार की कशीदाकारी और एप्लीक काम की समृद्ध परम्पराएं है। यह कार्य भारत के गुजरात और राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों में रहने वाली जातियों में यह कला अत्यंत समृद्ध है। छत्तीसगढ़ और विशेष रूप से बस्तर क्षेत्र के बंजारा भी साधारण सुई–धागे से यहाँ के आदिवासियों के देवी–देवताओं के लिए कौड़ी और एप्लीक काम से सजे वस्त्र तैयार करते है। प्रमुख रूप से चोली और लहंगा बनाये जाते है। यह दोनों ही वस्त्र राजस्थानी लहंगा–चोली जैसे होते है। पारम्परिक तौर पर बस्तर के आदिवासी महिलाएँ कम चौड़ाई की साड़ी पहनती थीं जो घुटनों तक आती थी, शरीर के ऊपरी भाग में ब्लाऊज या कुर्ती पहनने की परंपरा यहाँ थी ही नहीं। पेटीकोट या लहंगा यहाँ प्रचलन में कभी भी नहीं रहा। बंजारों द्वारा लहंगा–चोली का प्रचलन किस प्रकार देवी–देवताओं के लिए आरम्भ किया गया होगा, इसकी कल्पना करना भी कठिन है।

विलुप्ती के कगार में कौड़ी शिल्पः कौड़ी शिल्प प्राचीन काल से बस्तर में प्रचलित रहीं है। जब बायसन हार्न माडिया गौर के सिंगों से बना मुकूट पहनता है, तो उसके चहरे के सामने सफेद कौड़ियों की लड़े लटकती दिखाई देती है। मेले में बैगा रंग–बिरंगे परंपरागत कपड़े पहनकर देव आराधना करते है, तो कपड़े पर गुंथी हुई कौड़ियों की सफेदी किसी का भी ध्यान आकर्षित कर लेती है।

कौड़ियों से सजी हुइ छोटी टोकनी या झोला हर कोई उपयोग करना चाहता हैं। बाजारों में जब कौड़ी शिल्प युक्त परिधान या चीजें बिकने के लिए आती है, तो उसका मूल्य भी कौड़ियों के दाम ही मिलता है, जिसके कारण कौड़ी शिल्पकार अब ये परंपरागत कौड़ी शिल्प को छोड़ने लगे है, जिससे अब कौड़ी शिल्प एक लुप्त हस्तशिल्पकला में शामिल होने जा रहा है।

श्रीमती भनकी बाई (कौड़ी शिल्पकार): श्रीमती भनकी बाई बंजारा जनजाति की कौड़ी शिल्पकार है, जिनकी उम्र 62 साल है। इनका निवास इरिकपाल, जिला बस्तर में है। श्रीमती भनकी बाई के परिवार के 6 लोग इस कला से जुड़े हुए है, बीती 3 पीढ़ी से यह परिवार की परवरिश करता आ रहा है। श्रीमती भनकी बाई 16 साल की उम्र से यह कार्य कर रहीं है। 2011 में अब्दुल कलाम सम्मान प्राप्त हुआ है। भनकी बाई ने अपनी कौड़ी कला की खुबियाँ राष्ट्रीय स्तर पर लगने वाले हरियाणा के सुरजकुंड मेले में भी दिखाई और वाह–वाही पाई है।

उद्देश्य

1. कौड़ी शिल्प का उपयोग अलग–अलग भारतीय परिधान में फैशनेबल तरीके से कर लोगों के मध्य इस कला की लोकप्रियता बढाना।
2. कौड़ी शिल्प के स्वरूप में किस प्रकार परिवर्तन हुआ है, उसका अध्ययन करना।

सीमाएँ

1. इरिकपाल (बस्तर) में रहने वाले बंजारा जनजाति के नायक परिवार में ही कौड़ी शिल्प का अध्ययन किया गया है।
2. बस्तर जिले को ही अध्ययन के लिए चुना गया है।

शोधविधि

शोध प्ररचना

प्रस्तुत शोध पत्र कौड़ी शिल्प के बारे में है, तथा इसके लिए विवरणात्मक शोध प्ररचना का उपयोग किया गया है। कौड़ी शिल्प की लोकप्रियता परिधानों में बढ़ाने व फैशन के रूप में बढ़ाने के लिए इस शोध पत्र को बनाया गया है।

क्षेत्र का चुनाव

प्रस्तुत अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले का प्रशासनिक मुख्यालय जगदलपुर है। बस्तर अपनी परम्परागत कला–और शिल्प के लिए प्रसिद्ध है।

उपकरण का साधन

यह अध्ययन गुणात्मक तथ्यों पर आधारित हैं इसके लिए अवलोकन, क्षेत्र भ्रमण, प्रश्नावली आदि उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

तथ्यों का संकलन

तथ्यों का संकलन हमने, साक्षात्कार, क्षेत्र भ्रमण, प्रश्नावली, होम विशिष्ट, छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड के प्रकाशन द्वारा किया गया है। हमने मुख्यतः उनके निवास स्थान पर जाकर कौड़ी शिल्प का अध्ययन किया। उस स्थान के बंजारा जनजाति के शिल्प कारों द्वारा जानकारी प्राप्त की गई।

बंजारा जनजाति द्वारा बनाये गये कौड़ी शिल्प की कुछ कलाकृतियॉं

1. **चोली–लहंगाः** इसके लिए पीले, लाल, नीले कॉटन के कपडे से लहंगा बना कर उस पर कौड़ीयों को सजाया जाता है।

2 **गपलीः** टोकनी को गपली कहा जाता है। देवी–देवताओं में प्रसाद चढ़ाने के लिए टोकनी का उपयोग किया जाता है।

3. **चँवरः** देवी–देवताओं को हवा देने के लिए चँवर का उपयोग किया जाता है।

4. **पटड़ीः** गोड़ आदिवासी जब मेले में नाचते हैं तब कौड़ी शिल्प से बने परिधान व सिर पर सहरेनुमा पटड़ी पहनते है।

5. **गवर सिंगः** यह जंगली भैसे के सिंग को टोपीनुमा हिस्से में लगा कर बनाते है।

विश्लेषण व परिणाम

बस्तर जिला अपने पारम्परिक शिल्प कला के लिए देश–विदेश में भी मशहुर है जिनमें से एक कला कौड़ी शिल्प है, जिसमें सफेद कौड़ीयों को दैनिक उपयोग के वस्तुओं व परिधानों में उपयोग किया जाता है। इसकी सुंदरता सब का मन मोह लेती है। इस प्रस्तुत शोध पत्र में कौड़ी शिल्प से जुड़ी कई प्रश्न शिल्पकारों से किये गये जो निम्नानुसार हैः

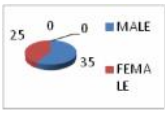

इरिकपाल में कौड़ी शिल्प का कार्य 60 लोग करते है, व इनमें 25 महिला व 35 पुरूष है।

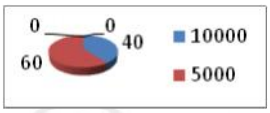

इस कला के माध्यम से दैनिक जीवन से संबंधित कलाकृति व परिधान से 5000 से 10000 तक प्रति महीने आमदनी हो जाती है।

ज्यादातर कच्चे माल की खरीददारी रायपुर से व बाकी जगदलपुर से ही किया जाता है।

सबसे ज्यादा माँग गपली (टोकरी), चँवर (धुकने का), पटड़ी (सहरा), गवर सिंग (जंगली भैसे का सिंग) व घाघरा चोली भी है।

निष्कर्ष

बस्तर जिले के केवल इरिकपाल में ही बंजारा जनजाति द्वारा इस शिल्प को पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित रखा गया है, पर इनकी भी संख्या अब बहुत कम रह गई है। यह शोध पत्र कौड़ी शिल्प को केवल एक नई दिशा प्रदान करने के लिए बनाई गई है, जिससे लोगों के मध्य कौड़ी शिल्प के लिये लोकप्रियता व बदले हुए स्वरूप को पसंद किया जाय।

संदर्भ सूची

1. From blogspot.com>omsonidnt
2. From Patrika.com
3. Das. A.K. (1979); Tribal Art & Craft, Agara Kala Prakashan, New Delhi
4. Sahapedia.org 13 Dec. 2018